International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(4): 46-50
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 27-06-2026
Accepted: 15-07-2026
Publish : 17-07-2026

प्रो. शीतलाप्रसाद शुक्ल
पुराणविद्या पीठप्रमुख,
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि. वि.,
नई दिल्ली

Correspondence:
प्रो. शीतलाप्रसाद शुक्ल
पुराणविद्या पीठप्रमुख,
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि. वि.,
नई दिल्ली

भारतीय ज्ञान-परम्परा में गौतम ऋषि का अवदान

प्रो. शीतलाप्रसाद शुक्ल

आध्यात्मिक जगत में मानव प्रतिदिन प्रातःकाल सप्तर्षियों को प्रणाम कर अपनी दिनचर्या का शुभारम्भ करता है। महर्षि गौतम भी उनमें प्रमुख हैं। वे ब्रह्माण्डीय एवं मुहूर्त-ज्ञान के परम विद्वान थे तथा ज्योतिषीय न्याय के प्रवर्तक माने जाते हैं। महर्षि गौतम देव-दानव, मानव के स्वभाव को अन्तर्दृष्टि से देखते थे जिसका अनुमान वे निमिष मात्र में लगा देते थे। ग्रहों में जैसे शनि को न्याय का ग्रह माना गया है उस न्याय के प्रवर्तक तो महर्षि गौतम ही हैं जिसकी परिगणना ज्योतिष में महत्वपूर्ण रहती है।

तक्कतोधिक्कतोता तथा तैतर्थ
तोंगदद्यांगधिन्नत्तशब्दान्मुहुः।
उच्चरन् हासविन्यासचश्चन्मुखः
संननर्त स्वयं श्रीभवानीपतिः।।

उज्ज्वलतम एवं गौरवपूर्ण कल्याणकारी अनेक महान् कार्यों का अनुष्ठान करने वाले प्राचीनतम ऋषि गौतम के जीवन चरित्र का वर्णन करना ही प्रस्तुत लेख का मुख्य मन्तव्य है। वेदों से लेकर संस्कृत महाकाव्यों तक सभी ग्रन्थों में ऋषि गौतम का तथा उस पवित्र वंश में उत्पन्न मंत्रद्रष्टा ऋषियों का उल्लेख प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। सर्व प्राचीन आर्ष ग्रन्थ ऋग्वेद में ही २१४ मंत्र, यजुर्वेद में ८१ मंत्र, अथर्ववेद में २९ मंत्र तथा सामवेद में भी अनेक साम गौतम वंश में उत्पन्न तपःसिद्ध ऋषियों द्वारा दृष्ट हैं। इससे स्पष्ट है कि महर्षि गौतम एवं उनका वंश अत्यन्त प्राचीन है।

जिन गौतम ऋषि के नाम पर गोत्र का प्रवर्तन हुआ, उनके विषय में मत्स्य पुराण के अध्याय १९६ में कहा गया है कि इनकी माता का नाम सुरूपा था तथा पिता का नाम अंगिरस था। इनके नाना का नाम मरीचि था, जो ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से एक हैं। अतः ब्रह्मा जितने प्राचीन हैं, उतने ही प्राचीन ऋषिश्रेष्ठ गौतम भी माने जा सकते हैं -

मरीचितनया राजन् सुरूपा नाम विश्रुता।
भार्या साऽङ्गिरसो देवास्तस्याः पुत्रा दश स्मृताः॥
सुरूवा जनयामास ऋषीन् सर्वेश्वरानिमान्।
बृहस्पति गौतमं च संवर्त च महाऋषिम्॥
आयास्यं वामदेवं च उच्चथ्यमुशिजं तथा।
इत्येते ऋषयः सर्वे गोत्रकाराः प्रकीतिता॥[1]

अपने प्रिय सखा अर्जुन से भगवान् कृष्ण ने एक बार कहा था कि ब्रह्मा के रूप में जिस समय मैंने ब्राह्मणों की सृष्टि की, उस समय उन ब्राह्मणों ने देवताओं, असुरों और महर्षियों को उनका अपना अधिकार सौंप दिया, किन्तु अधिकार प्राप्त कर लेने पर यदि उन देवताओं, असुरों और महर्षियों ने कोई अक्षम्य अपराध किया तो उन ब्राह्मणों ने उन्हें दण्डित भी किया। इस अवसर पर कृष्ण ने सर्वप्रथम महर्षि गौतम का नाम लिया, जिन्होंने देवराज इन्द्र को उसके अपराध का दण्ड श्राप के रूप में प्रदान किया -

'अहल्याधर्षणनिमित्तं हि गौतमाद्धरिश्मश्रुतामिन्द्रः प्रातः'[2]

इससे यह सिद्ध हो जाता है कि सृष्टि के आदि में जब ब्रह्माजी के द्वारा ब्राह्मण उत्पन्न किए गए उसी समय गौतम भी उत्पन्न हुए।

भगवान् सूर्य से शुक्लयजुर्वेद प्राप्त करने वाले मुनि याज्ञवल्क्य के साथ एक बार विश्वावसु गन्धर्व का जीवात्मा और परमात्मा की अभिन्नता के संबन्ध में संवाद हुआ था। ये विश्वावसु गन्धवं महर्षि कश्यपकी संतान हैं, जिन्होंने याज्ञवल्क्य से भी पहले यह संवाद जैगिषव्य, असित, देवल, पराशर, भूगु, कपिल, शुक, नारद, पुलस्त्य, सनत्कुमार आदि से सुन लिया था, किन्तु यह विषय महर्षि गौतम से भी वे सुन चुके थे-

गौतमस्याष्टिषंणस्य पुलस्त्यस्य च धीमतः।
सनत्कुमारस्य ततः शुक्रस्य च महात्मनः
कश्यपस्य पितुश्चैव पूवमेव मया श्रुतम्॥ [3]

इससे यह सिद्ध हो जाता है कि महर्षि गौतम निश्चित रूप से याज्ञवल्क्य ऋषि से भी पूर्व हो चुके हैं। महर्षि कश्यप भृगु आदि ऋषि जितने प्राचीन है, उन्हीं के समकालीन गौतम भी हैं। और भी अनेक ऐसे पुष्ट संकेत मिलते हैं, जिनके आधार पर महर्षि गौतम अत्यन्त प्राचीन सिद्ध होते हैं। इन्द्र द्वारा अहल्या के धर्षण की घटना तो भगवान् राम के समय से हजारों वर्ष पहले ही घट चुकी थी। अध्यात्मरामायण इसमें प्रमाण है

एवं वर्षसहस्रेषु ह्यनेकेषु गतेषु च।
रामो दाशरथिः श्रीमानागमिष्यति सानुजः॥[4]

पुराणों में उल्लिखित राजाओं के इतिहास के अनुसार भगवान् गौतम को पत्नी अहल्या की स्थिति भी कम से कम त्रेतायुग में तो माननी ही पडती है, क्योंकि त्रेतायुग में जिस समय भूम्यश्व राजा उत्तर पांचाल का शासन कर रहा था उस समय उसके पुत्र मुद्गल के साथ इन्द्रसेना का विवाह हुआ था, फिर मुगल से वध्यश्व उत्पन्न हुआ। इसी वध्यश्व से दिवोदास और अहल्या की उत्पत्ति हुई। यही अप्सरा कन्या गौतम से ब्याही गई थी।

गोदावरी में अहल्या संगम अथवा इन्द्र तीर्थ की उत्पत्ति के प्रसंग में ब्रह्मपुराण के ८७ वें अध्याय में कहा गया है कि ब्रह्मा ने अपनी सबसे श्रेष्ठ मानस कन्या अहल्या को उसके पालन-पोषण के निमित्त महर्षि गौतम को सौंप दिया, क्योंकि अन्य ऋषियों की अपेक्षा महर्षि गौतम ही उस समय समस्त गुणों में श्रेष्ठ, तपस्वी, बुद्धिमान्, समस्त शुभ लक्षणों से सुशोभित तथा वेद-वेदाङ्गों के ज्ञाता थे। बचपन बीत जाने के बाद युवती होने पर अहल्या को वस्त्राभूषणों से सुसज्जित करके गौतम ऋषि ब्रह्मा के पास उसे ले आए। उस समय तक महर्षि गौतम के मन में अहल्या के प्रति जरा भी विकार उत्पन्न नहीं हुआ था। इससे प्रसन्न होकर भगवान् ब्रह्मा ने इन्द्रादि देवताओं को ठुकराकर उस दिव्य गुण सम्पदा से युक्त अहल्या का विवाह गौतम मुनि से ही कर दिया तथा ब्रह्मगिरि पर्वत उन्हें रहने के लिए दिया। यह ब्रह्मगिरि पर्वत परम पवित्र, समस्त अभिलषित वस्तुओं को देने वाला तथा मंगलमय था।

किसी समय इन्द्र-अपराध की घटना के बाद पूर्णतः निर्दोष अहल्या को भी क्रोधवश सूखी नदी हो जाने का शाप दे दिया, किन्तु कृपा शील मुनि गौतम ने तत्काल ही प्रसन्न होकर अपनी पत्नी अहल्या से कहा कि हे कल्याणि ! पवित्र नदी गोदावरी में मिल जाने पर तुम अपने स्वरूप को पुनः प्राप्त कर लोगी। ब्रह्मपुराण के अनुसार अहल्या संगम तीर्थ में दो बातें विचित्र हुई-एक तो अहल्या का पुनः अपने स्वरूप में लौट आना तथा इन्द्र का सहस्रभग से सहस्राक्ष होना -

उभयं विस्मयकरं दृष्टवानस्मि नारद।
अहल्यायाः पुनर्भावं शचीभर्ता सहस्रदृक्॥
ततः प्रभृति तत्तीर्थमहल्यासगमं शुभम्।
इन्द्रतीर्थमिति ख्यात सर्वकामप्रद नृणाम्॥[5]

यद्यपि दोनों को शाप मिला, तथापि दोनों को दिया गया शाप वरदान-रूप में सिद्ध हुआ। श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने भी श्री राम विवाह के प्रसंग में यह अच्छी तरह से स्पष्ट किया है। उपर्युक्त कथा से भौ मुनिशार्दूल गौतम एवं अहल्याकी अत्यन्त प्राचीनता सिद्ध होती है।

मुनिसत्तम गौतम की प्राचीनतम स्थिति का रहस्योद्घाटन करने वाले एक दो स्थल महाभारत में भी प्राप्त होते हैं वनवास के समय युधिष्ठिर और कृष्ण की उपस्थिति में महषि मार्कण्डेय एवं मुनि नारद का अचानक शुभागमन हुआ, इस अवसर पर मार्कण्डेय जी ने सत्यवान्-सावित्री का पावन उपाख्यान सुनाया, जिसमें उन्होंने कहा कि जब सावित्री और सत्यवान् घर नहीं पहुँचे तो उनके माता-पिता अत्यन्त व्याकुल हुए। समीप ही रहने वाले ऋषियों ने समझाया-बुझाया कि निश्चित रूप से सत्यवान् जीवित हैं और वे आयेंगे, आप चिन्ता न करें। यहाँ गौतम ऋषि का नाम आता है कि जिन्होंने असन्दिग्ध वाणी में कहा कि मैं तपस्या के बल पर दूसरों की सारी चेष्टाएँ जान लेता हूँ। आप लोग मेरी यह बात बिल्कुल सच मानिए कि सत्यवान् जीवित हैं और मरे नहीं है -

"वायुभक्षोपवासश्च कृतो मे विधिवत् पुरा।
अनेन तपसा वेधि सर्व परिचिकीषितम्॥
सत्यमेतन्निबोधध्वं प्रियते सत्यवानिति।"[6]

मार्कण्डेय ऋषि की अतिप्राचीनता सुप्रसिद्ध एवं प्रामाणिक है। चिरंजीवी महापुरुषों में इनकी गणना की जाती है तथा ये लोक चरित्र के अद्भुत ज्ञाता भी रहे हैं, अतः मुनिपुंगव गौतम की प्राचीनता इस प्रसंग से भी सुस्पष्ट व सुपुष्ट होती है।

एक बार राजा पृथु के यज्ञ में महर्षि अत्रि और महर्षि गौतम उपस्थित हुए थे। वहाँ अत्रि ने राजा पृथु की स्तुति करते-करते उसे विधाता कह दिया, इस पर महर्षि गौतम ने विरोध किया तथा अत्रि मुनि को समझाया कि इन्द्र ही हमारे प्रजापति हैं, जो इस यज्ञ में उपस्थित हैं और सामने ही बैठे हुए हैं-

मैवमत्रे पुनर्ब्रया न ते प्रज्ञा समाहिता।
अत्र नः प्रथमं स्थाता महेन्द्रो वै प्रजापतिः।।

अत्रि मुनि ब्रह्मा के मानसपुत्र माने जाते हैं, इनके साथ गौतम मुनि का उल्लेख होने से यह स्पष्ट हो जाता है कि गौतम ऋषि भी अत्रिमुनि तथा राजा पृथु के समान ही अत्यन्त प्राचीन हैं।

कृष्ण ने जिस शिवसहस्रनाम का उपदेश भीष्म के सम्मुख युधिष्ठिर को सुनाया, वह ब्रह्मा से लेकर उपमन्यु पर्यन्त क्रमशः किसे किसे प्राप्त हुआ, यह पूरी परम्परा महाभारत में स्पष्ट की गई है। इसी परम्परा में गौतम मुनि का उल्लेख किया गया है, जिन्होंने शुक्र से शिवसहस्रनाम प्राप्त करके उसका उपदेश वैवस्वत मनु को दिया -

ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक प्रोवाच मूत्यवे।
मृत्यु प्रोवाच रुद्रेभ्यो रुद्रेभ्यस्तण्डिमागमत्॥
महता तपसा प्राप्तस्तण्डिना ब्रह्मसम्पनि।
तण्डिः प्रोवाच शुक्राय गौतमाय च भार्गवः॥
वैवस्वताय मनवे गौतमः प्राह माधवः
नारायणाय साध्याय समाधिष्ठाय धीमते।।
यमाय प्राह भगवान् साध्यो नारायणोऽच्युतः।
नाचिकेताय भगवानाह वैवस्वतो यमः॥
मार्कण्डेयाय वाष्णेय नाचिकेतोऽभ्यभाषत।
मार्कण्डेयान्मया प्राप्तो नियमेन जनार्दनः।।[7]

उपर्युक्त साक्ष्य के आधार पर यह कहने में कोई आपत्ति नहीं है कि महर्षि गौतम वैवस्वत मनु के समान ही अत्यन्त प्राचीन हैं।

एक बार ऋषि गौतम ने अंगिरा महर्षि से तीर्थ के विषय में उत्पन्न अपना धर्मसंशय स्पष्ट किया था, उसके प्रत्युत्तर के रूपमें अंगिरा ने जो समाधान किया, वैसा ही समाधान उन्होंने कश्यप मुनि से प्राप्त किया था, जिसे भीष्म ने युधिष्ठिर को प्रदान किया था -

अस्ति मे भगवन् कश्चित्तीर्थेभ्यो धर्मसंशयः।
तत् सर्व श्रोतुमिच्छामि तन्मे शंत महामुने।।[8]
दत्तवान् गौतमस्यैतदंगिरा वे महातपाः।
अंगिराः समनुज्ञातः काश्यपेन च धीमता।।[9]

महर्षि अंगिरा, महर्षि कश्यप अत्यन्त प्राचीनकाल के हैं, उनके साथ श्री गौतम का उल्लेख उनकी प्राचीनता को और अधिक स्पष्ट करता है।

ब्रह्मपुराण के अनुसार भगवान् शिव की जटा के साथ गौतमी गंगा को ब्रह्मगिरि से प्रवाहित करने का श्रेय महर्षि गौतम को ही प्राप्त होता है।

भगवान् शंकर की जटा में स्थित दिव्य गंगा को इस पृथ्वी पर प्रवाहित करने वाले एक तो राजा भगीरथ हैं और दूसरे ये ऋषि गौतम हैं, इसीलिए गंगा के दो भेद माने गए हैं-

महेश्वरजटास्था या आपो देव्यो महामते।
तासां च द्विविधो भेद आहर्तुर्द्वयकारणात्॥[10]

ब्रह्मगिरि से जिस गौतमी गंगा का प्रादुर्भाव हुआ, उसका विलक्षण प्रभाव कहा गया है। चतुरशिरोमणि गौतम ने शिव से यह भी वरदान माँग लिया कि इनके तट से दस योजन की दूरी के भीतर आए हुए महापात की मनुष्य भी, यदि स्नान किए बिना ही मर जाएँ तो भी वे अपने पितरों के साथ मुक्ति प्राप्त करें -

योजनानां तूरि तु दश यावच्च संख्यया।
तदन्तरप्रविष्टानां महापातकिनामपि।।
तत्पितृणां च तेषां च स्नानायाऽऽगच्छतां शिव।।
स्नाने चाप्यन्तरे मृत्योर्मुक्तिभाजो भवन्तु वै।।[11]

बाद में जब महर्षि गौतम ने गंगा को छोड़ा तो वे तो पूर्व समुद्र की ओर चली गई और मुनि श्रेष्ठ ने भगवान् शिव का पूजन प्रारंभ कर दिया। बस उनके स्मरण करते ही शिव तत्काल प्रकट हो गए, उस समय महर्षि गौतम ने उनका पूजन करके इस तीर्थ में स्नान करने की विधि पूछी-

त्रिलोचनं सुरेशानं प्रथमं पूज्य गौतमः।
उभयोस्तीरयोः स्नानं करोमीति दधे मतिम्।।
स्मृतमात्रस्तदा तत्राऽऽविरासीत्करुणार्णवः।
तत्र स्नानं कथं सिध्येदित्येवं शर्वमब्रवीत्॥[12]

भगवान शिव को यह गोदावरी अत्यन्त प्रिय है। इसके दस नामों का स्मरण करने मात्र से पापराशि का नाश हो जाता है। भागीरथी गंगा से भी श्रेष्ठ गौतमी गंगा कही गयी है क्योंकि ये भगवान् शंकर की जटा के साथ लाई गई थीं। दो सौ योजन के भीतर साढ़े तीन करोड़ तीर्थ होने से यह गोदावरी गंगा सदा सर्वदा तथा सबके लिए दिव्य तीर्थ है -

सर्वेषां सर्वदा तीर्थ गौतमी नात्र संशयः।
तिस्रः कोट्योऽर्ध कोटी च योजनानां शतद्वये।।
तीर्थानि मुनिशार्दूल संभविष्यन्ति गौतम।
इयं माहेश्वरी गंगा गौतमी वैष्णवीति च।।
ब्राह्मी गोदावरी नन्दा सुनन्दा कामदायिनी।
ब्रह्मतेजः समानीता सर्वपापप्रणाशिनी॥
स्मरणादेव पापौधहन्त्री मम सदा प्रिया।[13]

इसी गौतमी गंगा के तट पर मृत यमराज को शिव के प्रियगण नंदी ने गोदावरी का जल छिड़क कर जीवित कर दिया था। उस समय गौतमी गंगा के उत्तर तट पर विष्णु आदि देवता ठहर गए थे तथा महेश्वर की पूजा करने लगे थे। एक लाख बारह हजार तीर्थ भी वहाँ एकत्र हो गए थे-

ततो यमादयः सर्वे अभिषिक्तास्तु नन्दिना।
उत्थिताश्च सजीवास्ते दक्षिणाशां ततो गताः॥
उत्तमे गौतमीतीरे विष्ण्वाद्याः सर्वदेवताः।
स्थिता आसन्पूजयन्तो देवदेवं महेश्वरम्।।
तत्राऽऽसन्नयुतान्यष्ट सहस्राणि चतुर्दश।
तथा षट् च सहस्राणि पुनः षट् च तथैव च॥[14]

मुनिश्रेष्ठ गौतम की आज्ञा से शुक्र ने गोदावरी के तट पर ही शिव की आराधना करके मृतसंजीविनी विद्या प्राप्त की थी-

मृतसंजीविनी विद्यामज्ञातां त्रिदशैरपि।
तां दत्तवान्सुरश्रेष्ठस्तस्मै शुक्राय याचसे॥[15]

नारद पुराण के अनुसार महायोगी गौतम की तपस्या से प्रसन्न होकर व्यम्बकेश्वरक रूप में भगवान् त्र्यम्बक पर्वत पर विराजमान हुए[16]

इन्हीं गौतम ने अपने तपो बल से गंगा को अपने आश्रम में प्रकट करके उन ब्राह्मणों की १२ वर्षों तक सेवा की, जो अकाल के समय ऋषि गौतम की शरण में पधारे थे।[17]

देवीभागवत में यह कथा विस्तार पूर्वक आयी है, जहाँ कृतघ्नता पूर्वक आचरण करने के फल स्वरूप ब्राह्मणों को महर्षि गौतम ने घोर शाप देते हुए कहा था - हे अधम ब्राह्मणों ! आज से वेदमाता गायत्री के ध्यान और गायत्री मंत्र जपके सर्वथा अनधिकारी हो जाओ। वेदोक्त यज्ञ में, शिव की उपासना में, श्री भगवती देवी की अर्चना में, देवी-महोत्सव देखने में अनधिकारी रहो। रुद्राक्ष, बिल्व पत्र एवं भस्म धारण करने से वंचित रहो, तुम अधम होकर नीच जीवन बिताओ, तुम्हें माता-पिता, भाई-बहन और पत्नी बेचने वालों के समान अधम गति प्राप्त हो, जो भी तुम्हारे वंश में उत्पन्न होंगे उन्हें भी अधम गति प्राप्त होगी। तुम पर भगवती जगदम्बा का अवश्य ही कोप है, अतः तुम्हें अंधकूप और नरक कुण्ड में अवश्य ही रहना पड़ेगा।[18]

महर्षि गौतम ने गौतमी गंगा को तो प्रवाहित ही किया है, और भी अनेक तीर्थों के साथ गौतम मुनि का अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। स्कन्द पुराण के अनुसार नर्मदा के उत्तर तट पर गौतमेश्वर नामक उत्तम तीर्थ की स्थापना गौतम ऋषि ने ही की है। इस तीर्थ की महत्ता का प्रतिपादन स्वर्ग की सीढ़ी के रूप में किया गया है। सभी पातकों का नाश करने के लिए तथा स्वर्ग लोक की प्राप्ति कराने के लिए भगवान् शिव वहाँ सदा निवास करते हैं।[19]

गुप्त क्षेत्र में गौतमेश्वर नामक शिवलिंग की स्थापना गौतम मुनि ने ही की है। वहाँ पर उन्होंने योग साधना के द्वारा योगसिद्धि को प्राप्त किया।[20] इस स्थान पर आज भी गौतम मुनि विद्यमान हैं- ऐसा नारद मुनि ने अर्जुन से कहा था।[21] महीसागरसंगम ही गुप्त क्षेत्र कहलाता है, जहाँ शनिवार की अमावास्या के दिन स्नान करने का वही फल मिलता है, जो प्रभास क्षेत्र की दस, पुष्कर तीर्थ की सात तथा प्रयाग की आठ यात्रा करने से प्राप्त होता है [22]

ऋषिप्रवर गौतम गोकर्ण के शिवमहोत्सव को देखकर जिस समय मिथिला नगर में पधारे, उस समय इक्ष्वाकुवंशीय कल्माषपाद राजा को शिव की उपासना करने के लिए गोकर्ण ही जाने की सम्मति दी थी, जिससे वह ब्रह्म-हत्या के पाप से बच गया था।[23] उन्ही प्रसंग में कहा गया है कि रवि, सोम और बुध की अमावास्या में किया गया शिवपूजन का फल अनन्तगुना हो जाता है।

मुनिश्रेष्ठ गौतम तपःसिद्ध महापुरुष है-पारियात्र पर्वत पर ६० हजार वर्ष तक तपस्या करने का उल्लेख महाभारत में इस प्रकार किया गया है-

पारियात्रं गिरि प्राप्य गौतमस्याश्रमो महान्।
उवास गौतमो यं च कालं तमपि मे श्रृणु॥
षष्टि वर्ष सहस्राणि सोऽतप्यद् गौतमस्तपः[24]

इन्हीं गौतम के द्वारा पाले गए एक ऐसे हाथी का उल्लेख भगवान् व्यास ने अपने महाभारत में किया है, जो पुत्र के समान अत्यन्त प्रिय था, समाधि व जल लाकर दिया करता था, आश्रम की रख-वाली करता था, बड़ा विनम्र था, गुरु सेवा में तल्लीन रहता था, समझदार था, कृतज्ञ था और जितेन्द्रिय था-

इध्मोदकप्रदातारं शून्यपालं ममाश्रमे।
विनीतमाचायंकुले सुयुक्तं गुरुकर्मणि॥
शिष्टं दान्तं कृतज्ञं च प्रियं च सततं मम।[25]

इस अवसर पर यह भी कथा आती है कि इन्द्र ने पहले तो धृतराष्ट्र राजा का रूप धारण करके इस हाथी को चुरा लिया, लेकिन बाद में गौतम मुनि को वेदज्ञ ब्राह्मण जानकर तत्काल उसे लौटा दिया।

वेदवित्, तपःसिद्ध तथा महायोगी होने के अतिरिक्त ये मधुविद्या के भी ज्ञाता थे। स्वयम्भू ब्रह्मा से लेकर पौतिमाष्य तक जिन-जिन ऋषियों का नाम मधुविद्या की परम्परा में लिया गया है, उनमें गौतम मुनि भी सम्मिलित हैं-

"शाण्डिल्यः कौशिकाच्च गौतमाच्च।
गौतमः आग्निवेश्यात् "[26]

इनके अनेक प्रिय शिष्यों में उत्तंक नाम के एक शिष्य की कथा का चित्रण भी व्यास ने एक स्थान पर किया है। इन उत्तंक मुनि ने अपनी गुरुमाता अहल्या के कहने पर राजा सौदास की पत्नी मदयन्ती के पास जाकर उसके उससे दोनों दिव्य मणिमय कुण्डल प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली थी[27]

जिन गौतम मुनि के अलौकिक कृत्यों का अब तक उल्लेख किया गया है, ये ही भारतीय परम्परा के अनुसार न्यायशास्त्र के भी प्रणेता माने गए हैं। लोकोक्ति के रूप में यह कारिका विद्वान् लोग प्रायः उद्धृत किया करते हैं-

गौतमस्य कणादस्य कपिलस्य पतंजलेः।
व्यासस्य जैमिनेश्चापि दर्शनानि षडेव हि।।

पद्मपुराण में न्यायदर्शन के रचयिता गौतम ही कहे गए हैं-

कणादेन तु संप्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं महत्।
गौतमेन तथा न्यायं सांख्यं तु कपिलेन वै।[28]

देवीभागवत में सरस्वतीकवच धारण करके विशिष्ट ग्रन्थ रचना करने वाले अनेक ऋषियों के साथ महर्षि गौतम का भी नाम लिया गया है -

कणादो गौतमः कण्वः पाणिनिः शाकटायनः।
ग्रन्थं चकार यद् धृत्वा दक्षः कात्यायनः स्वयम्।।[29]

संभव है, सरस्वतीकवच की शक्ति से गौतममुनि ने इसी न्यायशास्त्र की रचना की हो। गौतम मुनि ही मेधातिथि के नाम से महाभारत में स्मरण किए गए हैं-

मेधातिथिर्महाप्राज्ञो गौतमस्तपसि स्थितः।
विमृश्य तेन कालेन पत्त्याः संस्थाव्यतिक्रमम्।।[30]

प्रसिद्ध संस्कृत नाटककार भास को भी यह पता था कि गौतम मुनि का ही नाम मेधातिथि है-

"भोः ! काव्यपगोत्रोऽस्मि साङगोपाङगं वेदमधीय
मानवीयं धर्मशास्त्रं, माहेश्वरं योगशास्त्रं,
मेध। तिथेर्यायशास्त्रं, प्राचेतसं श्राद्धकल्पं च"[31]

इन्हीं का दूसरा नाम अक्षपाद था, जिसका उल्लेख भाष्यकार वात्स्यायन तथा वार्तिककार दोनों ही करते हैं -

योऽक्षपादषि न्यायः प्रत्यभाव् वदतां वरन्।
तस्य वात्स्यायन इवं भाव्यजातमवर्तयत्॥ (वात्स्यायन)
यदक्षपादः प्रवरो मुनीनां शमाय शास्त्रं जगतो जगाद।
कुताकिकाज्ञाननिवृत्तिहेतोः करिष्यते तस्य मया निबंधः।।
(वार्तिककार)

अन्त में भी वार्तिककार उद्योतकराचार्य लिखते हैं -

यदक्षपादप्रतिमो भाष्यं वात्स्यायनो जगौ।
अकारि महतस्तस्य भारद्वाजेन वार्तिकम्।।[32]

इन्हीं अक्षपाद को कहीं कहीं अक्षचरण भी कहा गया है –

"अक्षचरणः गौतमऋषिर्यायशास्त्रसूत्रकारः"

स्कन्दपुराण के माहेश्वर खण्ड में भक्त प्रवर नारद का यह वक्तव्य तो विशेष द्रष्टव्य ही है कि महायोगी गौतम मुनि ही अक्षपाद हैं, जो परम साध्वी पतिव्रता-शिरोमणि अहल्या के पति हैं तथा जो गोदावरी गंगा को इस पृथ्वी पर लाए हैं।[33]

विदेशी विद्वान् चाहे स्वीकार न करें. तथापि भारतीय परम्परा तथा मनीषी विद्वानों की मान्यता इन कतिपय उपर्युक्त अन्तः साक्ष्यों के आधार पर मेधातिथि और अक्षपाद नाम से प्रसिद्ध महर्षि गौतम को ही न्यायसूत्र के प्रवर्तक के रूप में पुष्ट करती चली आ रही है। इन्हीं गौतम मुनि का प्रिय पुत्र चिरकारी था, जिसके साथ ही उन्होंने अपना पांचभौतिक शरीर छोड़ा-

उपास्य बहुलास्तस्मिन्नाश्रमे सुमहातपाः।
समाः स्वर्ग गतो विप्रः पुत्रेण सहितस्तदा।।[34]

समस्त प्राणियों का कल्याण करने की इच्छा से अनेक प्रकार के दुःसाध्य कार्य करके पवित्र अन्तःकरण वाले महर्षि गौतम ने प्रलयाबाधित शाश्वत ब्रह्मलोक को प्राप्त किया-

इदं यः श्रृणुयान्नित्यं यः पठेद् वा जितेन्द्रियः।
स याति ब्रह्मणो लोकं ब्राह्मणो गौतमो यथा॥[35]

पापों की निवृत्ति के लिए, अंतःकरण की शुद्धि के लिए तथा समय का सदुपयोग करने के लिए गौतम जैसे महान ऋषियों का दिव्य चरित्र अवश्य ही हम सभी को पढ़ना-सुनना चाहिए।

सन्दर्भ

1. मत्स्य पु. अ. १९६
2. महा. शान्ति ३४२.२३
3. महा. शान्ति. ३१८.५९-६२
4. (बालकाण्ड ५.३०)
5. ब्रह्म पु. ८७.६९-७०
6. वनपर्व २९८.१२-१३
7. अनुशासनपर्व १७.१७५-१८०
8. अनुशासनपर्व २५.५
9. अनुशासनपर्व २५.६९
10. ब्रह्म पु. ७४.२
11. ब्रह्म पु. ७५.४३-४५
12. ब्रह्म पु. ७६.४३.४५
13. ब्रह्म पु. ७७.८-११
14. ब्रह्म पु. ९४.४५-४७
15. ब्रह्म पु. ९५.२६
16. नारद पुरा-णांक, पृष्ठ ५९५
17. नारद पुराणांक, पृष्ठ ५९५
18. देवीभागवतांक पृष्ठ ६६१
19. स्कन्दपुराणांक पृष्ठ ८११
20. स्कंदपुराणांक, पृष्ठ १७०
21. स्कन्द पुराणांक, पृष्ठ १७५
22. स्कन्द-पुराणांक, पृष्ठ १७७
23. स्कन्द प्राणांक, पृष्ठ ५०८
24. शान्तिपर्व ४.५
25. अनुशासनपर्व १०२.९-१०
26. बृहदा. उप. २.६.१-२
27. आश्व मेधिकपवं, ५७ अध्याय
28. उत्तरखण्ड, २६३ अध्याय
29. देवी भागवत पुराणांक ९.४
30. शान्तिपर्व, २६५ अध्याय
31. प्रतिमानाटक, पंचमोंऽकः
32. सर्वदर्शनसंग्रह्नर दर्शनांकुर व्याख्या, पृष्ठ २७, द्रष्टव्य पृष्ठ २३४
33. स्कन्द पुराणांक, पृष्ठ १७०
34. शान्तिपर्व २६६.७८
35. अनुशासनपर्व १०२.६३